इस मास में विशेष: साधना दीक्षा

मनः भक्ति जागरण प्रयोग

22 दिसम्बर ,गीता जयन्ती व मोक्षदा एकादशी

बाह्य भक्ति दैहिक भक्ति होती है, मनः भक्ति आन्तरिक अजस्त्र भक्ति होती है। यह साधना प्रयोग उस ऊर्जा भण्डार को जो देह के भीतर स्थित है, उसे जाग्रत करता है। जिससे व्यक्ति अपने कार्य को अपनी इच्छानुसार सम्पन्न करने में समर्थ व सफल हो जाता है। साथ ही धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष में पूर्णता प्राप्ति हेतु यह प्रयोग श्रेष्ठ है। मनः शक्ति के जाग्रत होने पर ध्यान सिद्धि की क्रिया सरल हो जाती है तथा अहम् ब्रह्मास्मि की चेतना प्राप्त होती है। कुण्डलिनी जागरण का यह प्रारम्भिक अध्याय है।

दत्तात्रेय प्रणीत मनोकामना पूर्ति प्रयोग

26 दिसम्बर, दत्तात्रेय जयन्ती

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ ऐसी मनोकामनायें होती है, कुछ ऐसी इच्छायें होती हैं, जिनकी पूर्ति करना उसकी प्राथमिक आवश्यकता होती है, लेकिन किन्हीं कारणवश वह ऐसा करने में सक्षम नहीं हो पाता। परन्तु साबर मंत्रों के प्रणेता और नाथ योगियों के आदि गुरू भगवान दत्तात्रेय प्रणीत इस अद्वितीय प्रयोग के माध्यम से किसी भी मनोकामना की पूर्ति सम्भव है। साबर साधनाओं में सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त होती हैं और यह साधनायें सरल और सहज होती हैं। अतः किसी भी वर्ग का व्यक्ति इसे सम्पन्न कर सकता है।

श्रीविष्णु-लक्ष्मी गृहस्थ सुख समृद्धि प्राप्ति प्रयोग

07 जनवरी, सफला एकादशी

गृहस्थ जीवन की सफलता जहां एक ओर लक्ष्मी की उपस्थिति से प्राप्त होती है, वहीं भगवान श्री विष्णु की आराधना भी उतनी ही आवश्यक है, क्योंकि लक्ष्मी का आधार होने के साथ-साथ पालन कर्ता श्री विष्णु ही तो हैं। अतः गृहस्थ जीवन की कामनाओं की पूर्ति करने के लिये भगवान श्री विष्णु की साधना से बढ़कर कोई अन्य उपाय नहीं है। धन-धान्य, पुत्र-पौत्र, भू-गृह सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति के लिये यह साधना सर्वश्रेष्ठ है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के हृदय में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।